'पुल' और 'पुश' को जानें

- ब्र.कु. मोनिका,शांतिवन

रात होने लगी थी। ऑफिस में आगंतुकों का आना-जाना बंद हो गया था। लेकिन ऑफिस के दरवाज़े के पास एक लड़की खड़ी थी और दरवाज़े के बाहर एक ग्रामीण वृद्ध खड़ा था। उन दोनों में से किसी को भी दरवाज़ा खोलकर बाहर निकलने के लिए अंग्रेजी में लिखा शब्द पढ़ना नहीं आता था, और उसका अर्थ भी उनको नहीं मालूम था। इस कारण दोनों ही उलझन में थे।

बाहर खड़े ग्रामीण वृद्ध को 'पुश' यानि कि काँच के दरवाज़े को धक्का लगाना था। जबकि अंदर खड़ी लड़की को 'पुल' यानि कि द्वार के हैंडल को खींचना था। यह दोनों को ही पता नहीं था!

इस घटना में एक महत्व का बोध छिपा हुआ है। आखिर ज़िन्दगी क्या है? 'पुल' यानि कि खींचना और 'पुश' यानि धकेलना, इन दोनों क्रियाओं का महत्वपूर्ण अर्थ है। ज़िन्दगी की करुणता यह है कि हम भी 'पुल' और 'पुश' में गोता खाते रहते हैं।

मतलब कि जहाँ खींचना चाहिए वहाँ 'धक्का' लगाते हैं, और जहाँ धक्का लगाने की आवश्यकता है वहाँ 'खींचते' हैं।

दरअसल दाम्पत्य जीवन के झगड़े 'पुल' और 'पुश' के कारण ही होते हैं। पति या पत्नी स्वयं ही पकड़े हुए बात को छोड़ने को तैयार नहीं होते और खींचतान होती रहती है। जो दोनों में से एक अपनी जीत, हठ, अहंकार के अभिमान को 'पुश' यानि कि धक्का मारकर क्षमा का मार्ग अपना ले तो झगड़ा आगे बढ़ने से रुक सकता है!

दो पड़ोसियों के झगड़े में, दो मित्रों के झगड़े में, या ऑफिस या संस्था के सदस्यों में आपसी व्यवहार में मतभेद और मनमुटाव दिखाई पड़े, उसमें 'पुल' और 'पुश' ही जवाबदार होता है। हरेक अपनी बात को पकड़ के रखता है और दूसरे की बात को धक्का लगाता है। सामने वाला पक्ष और दूसरा पक्ष भी ईंट का जवाब पत्थर से देने को तत्पर रहता है और सामने वाले पक्ष के व्यक्ति की बात, सूचन, समाधान वृत्ति या नम्रता को धक्का लगाता है जिससे सम्बंध सुधरने की तमाम प्रक्रियाएँ नगण्य हो जाती हैं।

मुझे एक पुलिस स्टेशन का किस्सा याद आता है। पुलिस इंस्पेक्टर समाधान वृत्ति वाला था, इसलिए दो पड़ोसियों के बीच मारामारी की फरियाद को दर्ज करने से पहले दोनों के बीच समाधान हो जाए और सुखद अंत हो ऐसा ही वो सोचता था। मार खाने वाले ने कहा कि चलो साहेब, आप कहते हो ऐसा मैं सबकुछ भूल जाऊँ, लेकिन उसने मुझे मारा, उसका दु:ख व्यक्त तो करना ही चाहिए ना। मार खाने वाला खुद का अहम् वापिस खींचने को तैयार था।

लेकिन मारने वाला व्यक्ति खूब व्यंग्य मिजाजी था। क्षमा मांगने की बात आई, उतने में ही उसके अहंकार को ठेस पहुँची और उसने उसको कहा: 'अभी मैंने तुझे मारा ही कहाँ है? अभी तो मारना बाकी ही है!' तब दूसरे व्यक्ति ने पुलिस इंस्पेक्टर की हाजिरी में ही विरोधी पर नम्रता दिखाई और कहा कि ले, मार दे मुझे!

समाधान होने वाली बात की बाजी बिगड़ गई। इंस्पेक्टर ने मारने वाले व्यक्ति को कड़क शब्दों में धमकाया और पुलिस को उसे अरेस्ट करने के लिए सूचित किया। इतने में ही विरोध करने वाला घबरा गया और सॉरी व्यक्त करते हुए मार खाने वाले से माफी मांगने लगा, उसे गले लगा लिया और कहा: 'कि चल, मेरी गाड़ी में ही बैठ, मैं तुझे तेरे सगे-सम्बन्धियों के पास छोड़ दूँ।' इंस्पेक्टर खुश हो गया। उनकी मेहनत व्यर्थ न जाने से वो आनंदित हुआ।

मनुष्य को ज़िन्दगी में सुखी होने के लिए कहाँ 'पुल' (खींचना) और कहाँ 'पुश' यानि कि व्यर्थ बात को धक्का मार दिमाग और हृदय से निकालना है, उस समझ के विवेक का उपयोग करना ज़रूरी है। ज़िन्दगी के हर मोड़ पर यदि आप समझपूर्वक 'पुल' और 'पुश' को आज़माएँ तो आपका बेड़ा पार हो सकता है!

एक किस्सा है कि एक बालक अपनी दादी को मिलने गया। वैसे तो वो चंचल स्वभाव वाला व मस्तीखोर था, लेकिन दादी को मिलने से पहले उसने दादी के घर की दीवार में लटकते हुए विष्णु का बड़ा चित्र देखा, जिसमें नीचे लिखा हुआ था कि ईश्वर आपको देख रहा है। चित्र देख वो बालक अपने स्वभाव के विरुद्ध बिल्कुल शांत होकर दादी के पास बैठा। दादी उसके स्वभाव के प्रति सचेत थी। दादी ने कहा: 'बेटा, क्या बात है? आज आप इतना शांत क्यों हैं?'

बालक ने कहा: 'मुझे लगता है कि यहाँ मुझे सद्वर्तन करना चाहिए, क्योंकि ईश्वर मुझे देख रहा है। मैं तूफान करूंगा तो वो मुझे सज़ा देगा।'

वास्तव में तो ईश्वर हम सबको इतना चाहता है कि वो हमें देखे बिना रह ही नहीं सकता! ईश्वर के पास एक ही आदर्श है 'पुल' यानि कि खींचना, अपने प्रति आकर्षित करना। कैसे भी धृष्ट को भी धक्का मारने के लिए तैयार नहीं! वो सब तटस्थ पूर्वक निहार रहा है, क्योंकि वास्तव में मनुष्य उसकी ही तो संतान हैं ना!

कहाँ 'पुल' करना और कहाँ 'पुश' करना, उसके लिए पाँच बातें याद रखनी चाहिए...

1. ईश्वर सब देख भी रहा है और सुन भी रहा है। ऐसा समझ सद्वर्तन और वाणी की मधुरता सदा रखनी चाहिए।
2. कहाँ 'पुल' करना यानि खींचना, और कहाँ 'पुश' करना यानि कि धकेलकर बाहर निकाल देना, इतना विवेक अपना अंत:करण जानता है और गलत करने पर सचेत करता है।
3. ईश्वर मनुष्य को देखता है, ये मान्यता हमें ईश्वर खुश हो ऐसी भावना हममें प्रबल हो, इस ओर प्रेरित करती है।
4. जीवन में सुखी होना है तो क्षमा द्वारा व्यर्थ वस्तुओं को दिमाग से धक्का लगा दो।
5. अहंकार को धक्के का साधन बनाएंगे तो अहंकार ही आपको धक्के लगायेगा।

मऊ-उ.प्र.। मुलाकात के दौरान मुख्यमंत्री माननीय अखिलेश यादव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. विमला।

रावतभाटा-राज.। महाशिवरात्रि के कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए राजस्थान परमाणु परियोजना निदेशक विवेक जैन। साथ हैं नगरपालिका अध्यक्ष बंशीलाल प्रजापत, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. शिवली तथा ब्र.कु. मधु।

धुरी-पंजाब। महाशिवरात्रि के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ए.आर. शर्मा,चेयरमैन,एम.डी. ए.पी. सोलवेक्स राइसेला फूड्स को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राजिन्दर, ब्र.कु. मूर्ति तथा ब्र.कु. अनीता। साथ हैं नगर काउंसिल पुरुषोत्तम कंसल तथा अन्य।

आगरा-कमला नगर। महाशिवरात्रि पर आयोजित 'शिवरात्रि महोत्सव' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए सेंट पीटर कॉलेज के प्रिन्सीपल फादर पॉल थेनिकल, मेयर इंद्रजीत मोरयर, पॉलीटिकल लीडर कुंदंका शर्मा, ब्र.कु. शीला तथा अन्य।

औरैया-उ.प्र.। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए पूर्व चेयरमैन रत्ना शुक्ला, ब्र.कु. कृष्णा तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

ओल-राज.। महाशिवरात्रि के कार्यक्रम में अशोक यादव,एस.एच.ओ. को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कविता। साथ हैं ब्र.कु. बबिता तथा ब्र.कु. सुनीता।

मोतिहारी-बिहार। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में भारत सरकार के आयुष मंत्रालय के अधीन संचालित योग स्कूल के प्राचार्य एवं वैज्ञानिक डॉ. ब्रजेश्वर मिश्रा, ब्र.कु. मीना, ब्र.कु. माला, ब्र.कु. अशोक वर्मा तथा अन्य।

नई दिल्ली-पालम। महाशिवरात्रि पर निकाली गई शिव संदेश शांति यात्रा के दौरान उमंग उत्साह से भाग लेते हुए ब्र.कु. सरोज, ब्र.कु. अमर सिंह, दक्षिणी दिल्ली नगर निगम के उपमहापौर कुलदीप सोलंकी, पालम व्यापार मण्डल के अध्यक्ष राजेन्द्र भाई तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।